आज की कला

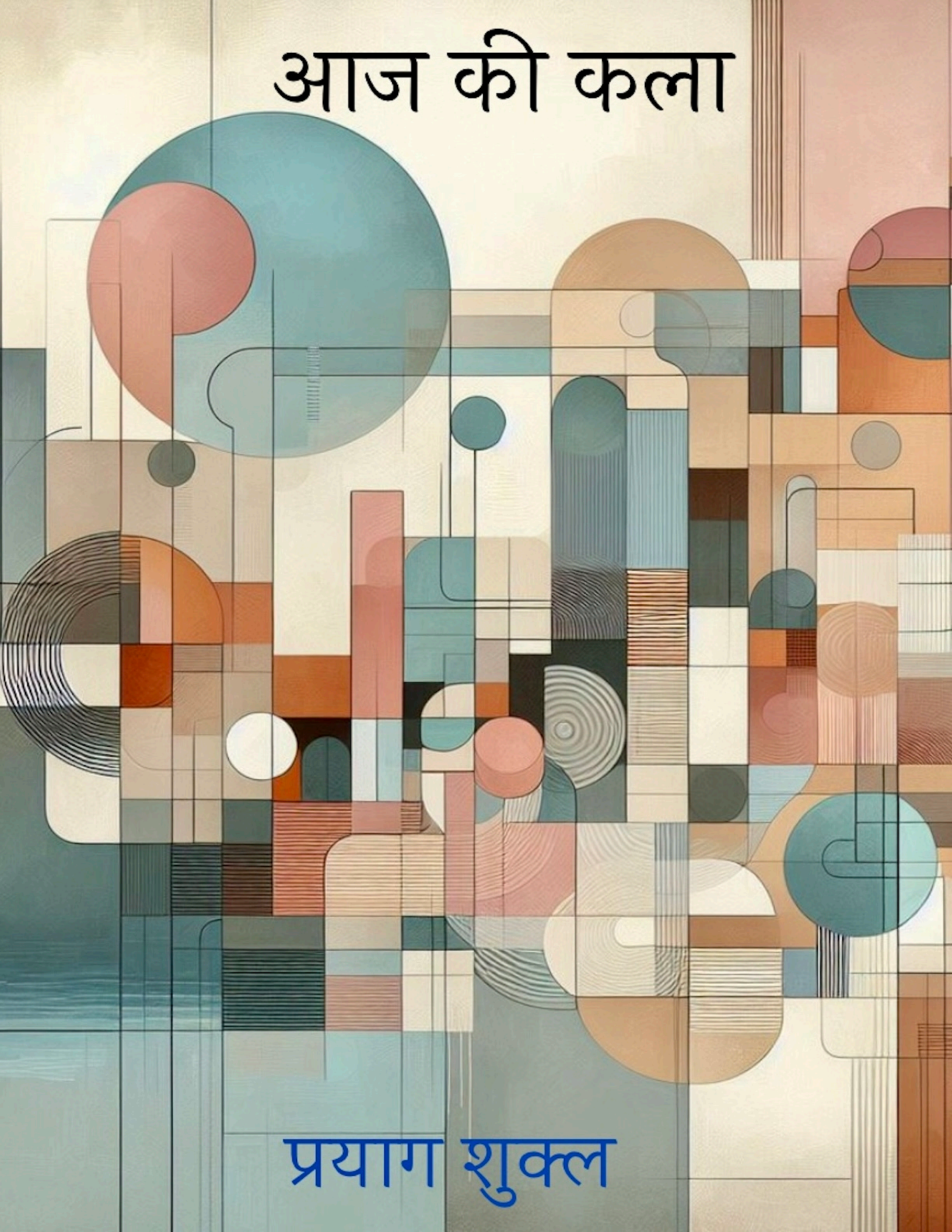

प्रयाग शुक्ल

आज की कला

प्रयाग शुक्ल

समर्पण

चित्रकार-कथाकार रामकुमार जी और उनकी सहधर्मिणी विमला जी को सादर, सप्रेम समर्पित है यह पुस्तक- जिनके स्नेह का संबल चालीस वर्षों से मुझे और मेरे परिवार को सहज ही उपलब्ध है, और जिनसे कला और जीवन-जगत की सुंदर चीज़ों को सराहने- समझने की दृष्टि भी मिलती रही है।

यह पुस्तक

कलाकृतियों को देखने सराहने और परखने के बहुतेरे ढंग और कोण हैं। स्वयं जीवन में भी चीज़ों को देखने-परखने की बहुतेरी विधियाँ प्रस्तावित की जाती रही हैं, जो समय-सिद्ध और अनुभव सिद्ध होती हैं। आख़िरकार कोई किसान, कोई माली, कोई जौहरी, कोई मेकेनिक, कोई इंजीनियर अपने-अपने क्षेत्र की चीज़ों को अपने अनुभव, संज्ञान और पूर्ववर्ती पीढ़ियों के अर्जित ज्ञान के सहारे ही तो समझता और परखता है। कला का क्षेत्र भी, इन क्षेत्रों से अलग नहीं है। वहाँ भी कला-गुणों की परख पूर्ववर्ती पीढ़ियों द्वारा अर्जित ज्ञान और बोध के साथ ही, नई कृतियों और नई परिस्थितियों को समझ-बूझकर की जाती है। इस पुस्तक में जीवन और कला दोनों में ही 'ध्यान से देखने' और 'ठहरकर कुछ देखने' के महत्त्व की चर्चा है। कला, और कलाकृतियाँ, जीवन और समाज से अलग-थलग पड़ी हुई चीज़ें न तो हैं, और न कभी हो सकती हैं। इसीलिए यह ठीक ही माना जाता है कि चाहे कला-समीक्षक हो, या कला का कोई सामान्य आस्वादक और भावक, उसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और अनुशासनों का जितना ज्ञान-ध्यान होगा, उतना सब कला-परख में भी उसके काम आएगा। सामान्य-सी बात यही है कि जो जीवन में 'देखता' है, वास्तव में चीज़ों पर ग़ौर करता है, वही

कलाकृतियों में भी अन्ततः बहुत कुछ ढूँढ और देख पाने की एक स्वाभाविक क्षमता अर्जित कर लेता है।

कला को ऐतिहासिक काल-खंडों में विभाजित करने की भी एक लम्बी परम्परा रही है, भौगोलिक आधारों पर भी वह बाँटी जाती रही है। विभिन्न देशों-प्रदेशों और समाजों के कला-गुणों और लक्षणों की चर्चा भी होती ही है। लोक-आदिवासी और नागर कला या आधुनिक कला और अब तो उत्तर आधुनिक कला, जैसे श्रेणी विभाजन भी उपलब्ध हैं ही। पर, ठीक ही माना यह भी जाता रहा है कि मूल रूप से कला अविभाज्य है, जैसे कि कविता-मर्म अविभाज्य है। हम किसी लोकगीत की पंक्ति पर उतना ही मुग्ध हो सकते हैं, जितना कि किसी आधुनिक काव्य की पंक्ति पर। इस पुस्तक में कला-धरोहरों, कला-स्मारकों को भी देखने-परखने के कुछ सूत्र और अनुभव प्रस्तावित हैं, खंड दो में, और आधुनिक कला की भी परख-पहचान की कई टिप्पणियाँ सुधी पाठकों को मिलेंगी। प्रसंगवश कुछ विदेशी और भारतीय कलाकारों की कृतियों पर लिखी गई कुछ समीक्षाएँ भी संकलित कर ली गई हैं, जिससे कि स्वयं पुस्तक के लेखक की कला-दृष्टि का, और कला-विवेचना की कुछ विधियों का एक अन्दाज़ा पाठकों को हो सके। पर, कुल मिलाकर यह पुस्तक कला मर्म पर, और कला-निर्मिति की बहुतेरी ज्ञात-अज्ञात विधियों आदि पर है, और ज़ोर इस पर भी है कि कला और कलाकृतियाँ हमारे आस्वाद के किस और कैसे फ़लक पर, हमारे कुछ